नई विधि ने महिला की गोद भरी

(प्रहरी संवाददाता)

गुवाहाटी, ७ जुलाई । कई वर्षों से हर तरफ से निराश महिला की अगर अचानक गोद भर जाय तो उसके आनंद की क्या कोई कल्पना कर सकता है ? गुवाहाटी रिफाइनरी में कार्यरत सुरेश पंडित की पत्नी श्रीमती सरोज देवी के साथ

ऐसी ही घटना घटी है । और श्रीमती सरोज देवी ने ममता को पूर्णता दी है भरलुमुख स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ ह्यूमन रिप्रोडक्शन नामक संस्थान ने । इस समय श्रीमती सरोज देवी एक बच्ची की मां हैं । असंख्य स्थानों पर इलाज करा कर थक हार चुके इस दंपति की आज खुशी का ठिकाना नहीं है कि उसके आंगन में भी खेलने के लिए एक बच्ची उसके घर आ चुकी है ।

इंस्टीट्यूट ऑफ ह्यूमन रिप्रोडक्शन के निदेशक डॉ. एम.एल. गोयनका ने बताया कि उक्त दंपति को वात्सल्य सुख इस संस्थान द्वारा विकसित एक नई विधा के द्वारा दी जा सकी है । इस संस्थान ने एस.आई.एफ.टी. (सीमेन एंट्रा फेलोपियन ट्रांसफर) नामक एक ऐसी विधा का इजाद किया है जिसके तहत पुरुष के वीर्य में स्पर्म की कमी तथा उसके निष्क्रिय होने के बावजूद बच्चा पैदा किया जा सकता है ।

डॉ. गोयनका ने बताया कि ओलिगो–अस्थेनोस्पर्मिया (कम से कम संख्या के स्पर्म से संबंधित) नामक रोग के मामले में उक्त विधि का अच्छा निष्कर्श निकला है । इस विधि के तहत स्पर्म को विशेष विधि से साफ कर लेप्रोस्कोपी के माध्यम से विशेष विधि से फेलोपियन के एम्प्यूलरी हिस्से में भेजा जाता है ।

डॉ. गोयनका ने बताया कि गुवाहाटी में यह अपने तरह का पहला और देश में दूसरा मामला है । इससे पूर्व बेंगलूर में इस तरह का एक मामला आया था और इसी विधि से महिला को गर्भ ठहरा कर प्रसव हुआ । उन्होंने बताया कि देश के कुल तीन स्थानों पर इस विधि को विकसित करने पर काम चल रहा है । तीसरा संस्थान बंबई में है । डॉ. गोयनका ने बताया कि श्रीमती सरोज देवी पर इस नई विधा का प्रयोग किया गया और उनके पति के स्पर्म को खासतौर पर साफ कर उसे स्थानांतरित किया गया । इस नयी विधि से श्रीमती सरोज देवी पहले ही प्रयास में गर्भवती हो गयीं और उन्होंने २४ जून को एक स्वस्थ बच्ची को जन्म दिया । उन्होंने बताया कि सामान्य तौर

पर पुरुषों में ५० मिलियन स्पर्म होने चाहिए और उसकी मोर्टीलिटी ५० प्रतिशत रहे । मगर श्री पंडित के मामले में ये दोनों बातें नहीं थीं ।

डॉ. गोयनका ने बताया कि यह विधि कुछ खर्चीली तो है, मगर प्रचलित दूसरी विधियों से यह काफी कम है । दूसरी विधियों पर जहां पंद्रह बीस हजार खर्च होते हैं, वहीं इस विधि पर मात्र ५–६ हजार की लागत आती है ।